हिन्दी - सतयुग से कलियुग तक

कभी यह विश्व था एक सुंदर गाँव
शीतल-सुहावनी थी इसकी छाँव
अनेक देश और अनेक भांति से सुसज्जित
मनमोहक सौरव प्राकृतिक पुष्पों से पल्लवित

भिन्न धर्म, जाति के लोगों का अब बना ठिकाना
आज भी नदियाँ, सागर गाते सुमधुर तराना
भाषाएं भी सभी कितनी मनभावन
संस्कृति को दर्शाती, बरसातीं सुख सावन

किन्तु जो है सर्वोच्च अविनाशी भाषा
सुसभ्य, सुसंकृत, सुगम्य और जगाती आशा
परमशक्ति परमात्मा ने जिस से महावाक्य उच्चारा
वही है अविनाशी खण्ड भारत की हिन्दी भाषा

समयानुसार बदले हिन्दी के भी कई रूप
यही बनकर संस्कृत, मिटाती अज्ञान की धूप
देह-अभिमान वश जब मानव हो जाता विकारो के वशीभूत
परमधाम निवासी शिव होते अवतरित, करने विकारो से मुक्त

ब्रह्मा मुख-कमल द्वारा देते भगवान शिव गीता ज्ञान
स्वयं को आत्मा समझ उन्हे याद कर, बनते हम महान
यह शिव की वाणी, ज्ञान व आतिन्द्रिय सुख से भरपूर
सतयुग में यही हिन्दी देवनागरी बन जाती देवत्व स्वरूप

एक सत् आदि सनातन देवी-देवता धर्म की शिव रखते बुनियाद
यही हिन्दी कहलाएगी देवनागरी, सब होंगे खुश और आबाद
पवित्रता की राखी बांधकर, बनाते भारत को सुखी और संपन्न
सोने की चिड़िया भारत होगा खुशियों का महकता चमन

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर लहरायें स्वर्णिम युग का परचम
बनकर सर्वगुण संपन्न, पा लें स्वर्गिक ताज, तिलक और सिंहासन